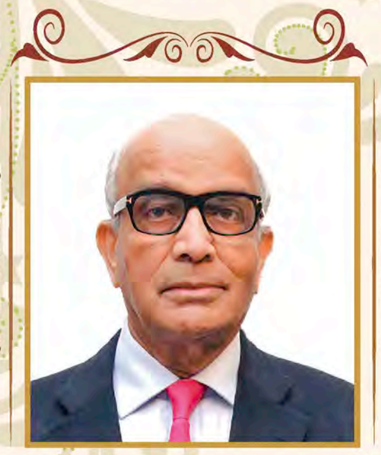

श्री रवीन्द्र चन्द्र भार्गव
Shri Ravindra Chandra Bhargava



पद्म भूषण
Padma Bhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए
Receiving the decoration from the President

श्री रवीन्द्र चन्द्र भार्गव

श्री रवीन्द्र चन्द्र भार्गव भारत की सबसे बड़ी कार कंपनी, मारूति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष हैं। आपके नेतृत्व में मारूति ने सफलता की ऊँचाइयों को छुआ और भारत में अपना दबदबा कायम किया।

2. आपका जन्म 30 जुलाई, 1934 को देहरादून में हुआ। दून स्कूल में अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.एससी. तथा एम.एससी. की उपाधि प्राप्त की। आप 1956 में, भारतीय प्रशासनिक सेवा में नियुक्त हुए और उस बैच में प्रथम स्थान पर रहे तथा आपको उत्तर प्रदेश संवर्ग आबंटित किया गया। आपने 1964 में विलियम्स कॉलेज से एम ए (डेवलपमेंट इकोनोमिक्स) की उपाधि प्राप्त की। आपने 1968 से 1973 के बीच जम्मू एवं कश्मीर राज्य में कार्य किया, जिसमें ज्यादा समय तक आप कृषि उत्पादन आयुक्त के पद पर रहे। वर्ष 1973 से 1977 के बीच आप ऊर्जा मंत्रालय में रहे तथा पिट हेड सुपर थर्मल पॉवर स्टेशनों की अवधारणा और नेशनल थर्मल एंड हाइड्रो पॉवर कारपोरेशंस की स्थापना में मार्गदर्शक की भूमिका निभायी। आपने वर्ष 1979 से 1981 के बीच भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स के वाणिज्यिक निदेशक के रूप में कार्य किया।

3. वर्ष 1981 में, मारूति उद्योग लिमिटेड को एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में शामिल किए जाने के तुरंत बाद आपने इसमें कार्य ग्रहण किया। सुजुकी मोटर कार्पोरेशन के साथ एक संयुक्त उद्यम बनाने के लिए आपने और प्रबंध–निदेशक ने सभी निर्णय लिए और वर्ष 1983 में उत्पादन शुरू कर दिया। आपको 1985 में प्रबंध निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया और वर्ष 1997 में उसी पद से सेवानिवृत्त हुए। मारूति के 2003 में सूचीबद्ध किए जाने के बाद आप पुनः मारूति बोर्ड में शामिल हुए और वर्ष 2007 में बोर्ड के अध्यक्ष बने।

4. आपको मारूति में जापानी प्रबंधन की अवधारणाओं ओर प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक संशोधित करने और इन्हें लागू करने के लिए जाना जाता है, जिसने प्रबंधन और कामगारों के बीच एक अनुपम रिश्ता कायम करने की नींव रखी। मारूति ने भारतीय बाजार में एक प्रभुत्व संपन्न हैसियत हासिल की और कंपनी ने उत्पादकता और गुणवत्ता के जिन स्तरों को प्राप्त किया, उसके लिए यह सरहाना का पात्र बनीं। मारूति की बिक्री और बिक्री के बाद की अवसंरचना तथा प्रक्रियाओं के कारण इसने वर्ष 1997 में कार–बाजार के 82 प्रतिशत हिस्से पर कब्जा कर लिया और एक ऐसा ब्राण्ड बन गई जिसे पूरे विश्व में मान्यता मिली। आपको मारूति को ऐसा वातावरण एवं प्रक्रियाओं के सृजन का श्रेय जाता है, जिसने भारत में आधुनिक अवयव विनिर्माण उद्योग की त्वरित वृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया। आपने "द मारूति स्टोरी" शीर्षक से एक पुस्तक का लेखन किया जो मारूति के शुरू किए जाने की तारीख से इसके इतिहास का वर्णन करती है। आपने 'सुजुकी की भारतीय रणनीति' पर जापानी भाषा में भी एक पुस्तक लिखी है।

5. आपने वर्ष 1980 के दशक के अंत से मारूति कारों के निर्यात की भी अगुआई की। मारूति की सफलता तथा एक विकसित अवयव उद्योग की मौजूदगी ने, वर्ष 1993 में लाइसेंस प्राप्त करने की अपेक्षाओं को समाप्त करने के बाद, लगभग सभी वैश्विक कार विनिर्माता कंपनियों हेतु भारत में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त किया। वैश्विक प्रतियोगिता के बावजूद मारूति, भारतीय बाजार में निर्विवादित रूप से अग्रणी कंपनी बनी हुई है और बिकने वाली हर दो कारों में लगभग एक, मारूति उत्पाद होता है। विश्व की सर्वोत्तम कंपनियों की तुलना में मारूति की उत्पादकता के उच्च स्तर और इसके द्वारा प्राप्त की गई गुणवत्ता ने विदेशी कंपनियों की 'मेंकिंग इन इंडिया' की संभाव्यता को स्थापित किया है। सुजुकी मोटर कारपोरेशन की विदेशी परियोजनाओं में मारूति सबसे सफल कंपनी बन गई है और इसका बाजार–पूंजीकरण सुजुकी जापान की तुलना में उच्चतर है।

6. आपके इस तरह के सफल जापानी संयुक्त उद्यम के निर्माण में योगदान और भारत तथा जापान के बीच बढ़ते रिश्तों के विकास को 2011 में जापान के सम्राट ने तब पहचाना था जब उन्हें आर्डर ऑव द राइजिंग सन, गोल्ड एंड सिल्वर स्टार प्रदान किया गया था। आपको इकोनोमिक टाइम्स, आल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन तथा फोर्ब्स इंडिया सहित कई लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। आपको एक भारतीय विश्वविद्यालय से मानद पी एच.डी. की उपाधि भी प्रदान की गई है।

Shri Ravindra Chandra Bhargava

Shri Ravindra Chandra Bhargava, the Chairman of Maruti Suzuki India Limited, India's largest car company, is the person who has led Maruti to its success and dominance in India.

2. Born on 30th July 1934 in Dehradoon, Shri Bhargava after schooling in the Doon School received B.Sc. and M.Sc. degree from the Allahabad University. He was appointed to the Indian Administrative Service in 1956, being placed 1st in that batch, and was allotted to the UP cadre. He acquired a MA (Development Economics) degree from Williams College in 1964. He worked in J&K State from 1968 to 1973, mostly as the Agricultural Production Commissioner. From 1973 to 1977 he was in the Energy Ministry, and piloted the concept of pit head super thermal power stations, and the establishment of the National Thermal and Hydro Power Corporations. He worked as Commercial Director of Bharat Heavy Electricals from 1979 to 1981.

3. Shri Bhargava joined Maruti Udyog Limited, a public sector undertaking, soon after its incorporation in 1981. He and the Managing Director took all decisions leading to the formation of a joint venture with Suzuki Motor Corporation, and the start of production in 1983. He was appointed as the Managing Director in 1985 and retired from that position in 1997. Shri Bhargava re-joined the Board of Maruti after it was listed in 2003, and became Chairman of the Board in 2007.

4. Shri Bhargava is recognized for successfully modifying and introducing Japanese management concepts and practices in Maruti that led to a unique relationship between the management and the workers. Maruti established a dominant position in the Indian market, thanks to the productivity and quality levels that the Company achieved. The sales and after sales infrastructure and practices led to Maruti having an 82% share of the car market in 1997, and a brand that was universally recognized. Maruti is credited with creating the environment and practices that led to the rapid growth of a modern component manufacturing industry in India. Mr. Bhargava has authored 'The Maruti Story' a book that describes the history of Maruti from its start. He is also the author of a book, in Japanese, on Suzuki's Indian strategy.

5. Shri Bhargava also spearheaded the export of Maruti cars from the late 1980's. The success of Maruti, and the presence of a developed component Industry, led to almost all global car manufacturing companies entering India after the licensing requirements were removed in 1993. Despite global competition Maruti remains the unchallenged leader in the Indian market, nearly one in two cars sold being Maruti products. The high levels of productivity, comparable to the best in the world, and quality attained by Maruti, has established the feasibility of foreign companies 'Making in India'. Maruti has become the most successful overseas project of Suzuki Motor Corporation and its market capitalization is higher than that of Suzuki Japan.

6. Shri Bhargava's contribution in building such a successful Japanese venture, and building relationships between India and Japan was recognized by the Emperor of Japan when, in 2011, he was conferred the Order of the Rising Sun, Gold and Silver Star. He has been given several Life Time Achievement Awards, including from the Economic Times, All India Management Association and Forbes India. He also has an Honorary PhD degree from an Indian University.